कहं न जाने बिचार।।२।।

पद २४९

(राग: काफी - ताल: दीपचंदी)

सुगर उतारनहार । प्रभु खेवट मारो ।।ध्रु.।। शरन आये वाको दोख

न जाने। कर देत सागरपार।।१।। मानिक के प्रभु भक्तिन भूखो।